पाठ

कैमरे में बंद अपाहिज

(रघुवीर सहाय)

जीवनपरिचय =>

रघुवीर सहाय समकालीन हिंदी कविता के संवेदनशील कवि हैं। इनका जन्म लखनऊ उत्तर प्रदेश में 1929 में हुआ था इनकी संपूर्ण शिक्षा लखनऊ में ही हुई। इन्होंने प्रतीक अखबार में सहायक संपादक के रूप में कार्य किया, फिर वे आकाशवाणी के समाचार विभाग में रहे। 1990 में दिल्ली में इनका देहांत हो गया।

रचनाएँ =>

काव्य संग्रह – आत्महत्या के विरुद्ध, हँसो-हँसो जल्दी हँसो, सीढ़ियों पर धूप में आदि
कहानी संग्रह – रास्ता इधर से है
निबंध संग्रह – लिखने का कारण

साहित्यिक विशेषताएँ =>

रघुवीर सहाय की प्रतीभा लेखन के लगभग सभी संभव रूपों में प्रकट हुई। उन्होंने सभी रूपों में गहरी सूझ-बूझ, संवेदनशीलता, बौद्धिक प्रखरता तथा रचनात्मकता के साथ काम किया

भाषा शैली =>

रघुवीर सहाय ने अधिकतर बातचीत की शैली में लिखा है, वे अनावश्यक शब्दों के प्रयोग से बचते रहे हैं। इन्होंने कविताओं में अत्यंत साधारण

तथा अनायास सी प्रतीत होने वाली शैली में समाज की दारुण विडंबनाओं को व्यक्त किया है।

साहित्य में स्थान =>
हिंदी साहित्य के द्वितीय तारसप्तक के कवियों में आपका नाम युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न : 1 कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं — आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है।

उत्तर : 1 कोष्ठकों में दी गई पंक्तियों के माध्यम से संयोजक अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति करता है, किंतु वह सार रूप में अपने विचार लोगों के समक्ष रखना चाहता है। इनसे ऐसा प्रतीत होता है, जैसे वह इन कथनों के माध्यम से अपने उद्देश्य में कितना सफल हो पाता है। उसका वर्णन करना चाहता है।

प्रश्न : 2 कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है — विचार कीजिए।

उत्तर : 2 कविता अपनेपन की भावना में छिपी क्रूरता को व्यक्त करती है। सामाजिक उद्देश्यों के नाम पर अपाहिज की पीड़ा को जनता तक पहुँचाया जाता है। यह कार्य ऊपर से करुण भाव को दर्शाता है परंतु इसका वास्तविक उद्देश्य कुछ

और ही ओता है। संचालक अपाहिज की अपंगता का बेचना चाहता है। वह एक रोचक कार्यक्रम बनना चाहता है ताकि उसका कार्यक्रम जनता में लोकप्रिय हो सके। उसे अपंग की पीड़ा से कोई लेना देना नहीं है।

ये कविता यह बताती है, कि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले इस प्रकार के अधिकांश कार्यक्रम कारोबारी दबाव के कारण संवेदनशील होने का दिखावा करते हैं. इस तरह दिखावटी अपनेपन की भावना क्रूरता की सीमा तक पहुँच जाती है।

प्रश्न : 3 हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर : 3 इस पंक्ति के माध्यम से कवि ने यही व्यंग किया है की मिडिया वाले समर्थ और शक्तिशाली होते हैं। इतने शक्तिशाली की वे किसी करुणा को पर्दे पर दिखा कर पैसा कमा सकते हैं वे दुर्बल अर्थात अपाहिज को लोगो के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। ताकि लोगों की सहानुभूति प्राप्त करके प्रसिद्धि पा जा सके

Que-4 यदि शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति और दर्शक दोनों एक साथ रोने लगेंगे तो उससे प्रश्नकर्ता का कौन सा उद्देश्य पूरा होगा ?

Ans:- प्रश्नकर्ता अपने प्रश्नों के माध्यम से दर्शकों को शारीरिक रूप से चुनौति का सामना कर रहे व्यक्तियों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने के प्रति प्रेरित करना चाहता है यदि वे दोनों एक साथ रोने लगे तो दर्शकों में उनके प्रति करुणा का भाव जागने लगेगा वे ऐसे लोगों की सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रह सकेंगे समाज में लोगों में शारीरिक और मानसिक दुख दर्द, यातना, वेदना, देने से बचेंगे इस प्रकार शारीरिक रूप से चुनौती का सामना कर रहे व्यक्ति भी समाज में प्रतिष्ठित ढंग से अपना जीवन यापन कर सकेंगे

Que-5 परदे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है।

Ans- कवि कहना चाहता है कि समाज के लोग सहानुभूति प्राप्त करना चाहते हैं वे चाहते हैं कि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रोने लगे लेकिन वे उस रोने वाले दृश्य को ज्यादा देर तक

नही दिखाना चाहते क्योंकि ऐसा करने मे उनका पैसा बर्बाद होगा ~~समाज~~ समय और पैसे को बर्बादी वे नही करना चाहते

13/8/24